११२. मानव सदा-सदा सुखी रहकर ही विधिवत जीना चाहता है

१२-१०-१३

विधि के बारे में आज तक अनेक प्रयोग हुआ, जिसमें से एक ही बात तय हुआ कि सभी प्रयास किसी न किसी समुदाय चेतना के अर्थ में रहा | व्यक्तिवाद, समुदायवाद के योगफल में सभी संविधान बना | सारे संविधान उन्माद और अपराध को वैध माना | अभी तक न्याय स्पष्ट नहीं हुआ | न्यायालयों की रचना हुई | न्यायालयों में लोग जाते भी हैं | वहाँ न्याय रहता नहीं; यही खूबी है | इसे विधिवत स्नेहपूर्ण विधि से बदलने की आवश्यकता है; जिसके लिये विकल्प लिखा है | विकल्प विधि से दर्शन, विचार, शास्त्र तीनों चीज लिखा है | इन तीनों चीजों में मुख्य बात विकसित चेतना के अर्थ में लिखा है | विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना रूप में प्रमाणित होता है | हमनें इसे भले प्रकार से देख लिया, जी लिया है और कुछ शेष नहीं है | इसमें और कुछ भी शंका नहीं है | इस क्रम में मानव अपने विकसित चेतना को पहचानने के क्रम में जीवों से अच्छा जी चुका है | अब मानव चेतना की बारी है | जीवों से अच्छा जीने के क्रम में आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन को पा लिया है, व्यवहार में ला लिया |

प्रौद्योगकी विधि से सबको सर्वसुलभ हो गया | ये सब सकारात्मक भाग है | नकारात्मक भाग यही है-उन्माद-लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद; अपराध-संघर्ष और युद्ध | सौ से अधिक देश कहलाता है इस धरती में | सभी देशों में संघर्ष और युद्ध के लिये तैयारी ही प्रमुख रहा | अब शनैः शनैः कुछ लोग सार्वभौमता को सोच रहे हैं | सभी देशवासी धरती का संतुलन, आचरण में संतुलन चाहते हैं | आचरण में संतुलन और धरती में संतुलन का दवाई ज्ञान रूप में है | ज्ञान रूप का जिक्र नहीं हुआ है | होने के लिये सुझाव रखा है विकल्प में | विकसित चेतना विधि से ही मानव, मानवत्व के साथ जीना बनता है | मानवत्व, मानव का स्वत्व है | दूसरे भाषा में मानवत्व ही हर मानव का स्वत्व है | मानवीयतापूर्ण विधि से जीने के लिये हर मानव तत्पर है | दूसरा भाषा से जैसा जीता है, उसको मानवीयता मानता है | ये दो प्रकार हैं | इसलिए विकल्प की आवश्यकता रही | विकसित चेतना विधि से सर्वमानव अपनाने की व्यवस्था है, जिससे सर्वदेश कालीय मानव में मानसिकता की एकरूपता की व्यवस्था है | इसी क्रम में विकल्प प्रस्तुत है | यह नियति विधि से स्पष्ट है | नियति विधि का मतलब सह-अस्तित्व है | सह-अस्तित्व विधि नहीं थ, इसको हमने नाम दिया है |

नियति विधि के अनुसार अर्थात सह-अस्तित्व के अनुसार मानव चेतना, मानव का स्वत्व होना देखा गया है, समझा गया है, जीकर देखा गया है | इन सभी बातों को स्पष्ट करते हुए विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प अपने में विकसित चेतना का प्रतिपादन का स्वरूप है | विकसित चेतना मानव का स्वत्व होने के कारण से सर्वदेश काल में स्थित मानव में स्वीकार होना देखा गया है | यह हिन्दी भाषा में प्रसवित हुआ है, स्पष्ट हुआ है, लिखा गया है | क्रम से प्रांतीय भाषा में पहुँच रहा है और अंतर्राष्ट्रीय भाषा में पहुँ रहा है | अंतर्राष्ट्रीय भाषा में पहुंचने के कार्यक्रम के रूप में कनाडा में कार्यक्रम चल रहा है; जहाँ शिविर के रूप में अध्ययन हो रहा है | अभी मानव को अथवा सर्वमानव को अंग्रेजी भाषा में सामान्य शिविर शुरू हुए हैं |

इस क्रम में काफी लोग सहमत हो रहे हैं | अमेरिका में अर्थात कनाडा में ही मानव में सर्वदेश कालीय मानव समझदार होने के अर्थ में विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प भी अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में माना गया, अंग्रेजी में प्रस्तुत हो रहा है | इसे कनाडा के आस पास देखा जा सकता है | धीरे-धीरे मानव यदि समझता है सर्वदेश काल में, सर्वभाषा में, तब स्वाभाविक है

सार्वभौम व्यवस्था होना दूर नहीं है | सर्वदेश काल में विभिन्न रंग,नस्ल के साथ जीने वाला मानव, मानसिकता के रूप में एक होना आवश्यक रहा है | यह विकल्प विधि से सम्भव है | परम्परा विधि से व्यक्तिवाद, समुदायवाद ही रहा है | व्यक्तिवाद, भोगवाद के लिये अर्थ तंत्र में फंसा है | दूसरा भाग अपराध में फंसा है | अपराध को ऐसा देखा गया कि दो देश, दो संविधान में जीता हुआ परस्परताएं अर्थात दूसरा भाषा में विभिन्न देश काल में बसा हुआ आदमी जात अपना-अपना देश का एक सीमा बना रखा है | एक देश दूसरा देश के साथ जब लड़ाई करना होता है अथवा लड़ाई के लिये प्रयत्न होता अथवा तैयार होना होता ऐसे स्थिति में देखा गया, सीमा के एक तरफ एक देश वाले जवान वीरता के साथ बैठा रहता है |

दूसरा देश वाला भी वैसा ही बैठा रहता है | दोनों मानव जात के इकाइयां हैं | ज्ञान सम्पन्न होने का अर्हता सम्पन्न हैं, अधिकार सम्पन्न हैं, आवश्यकता सम्पन्न हैं | ऐसे स्थिति में रहता हुआ मानव एक दूसरे को विरोधी मानता है | एक दूसरे के ऊपर गोली चलाते हैं | इस ढंग से मानव जात ही अनेक अनेक समुदाय में बंट गया | संघर्ष और युद्ध ही मनुष्य को यहाँ पहुंचाया | धरती बीमार होने का कारण भी युद्ध ही रहा | भले ही विभिन्न प्रकार से क्यों न हो | इस क्रम में चलता हुआ मानव अर्थात संघर्ष के साथ चलता हुआ मानव अभी सोचने लगा है | पूरे धरती का संतुलन, धरती में स्थित मानव का संतुलन होना जरूरी है | उसके लिये आवश्यकीय ज्ञान, विवेक, विज्ञान स्पष्ट नहीं हुआ | हजारों वर्षों से मानव इस धरती पर जीता हुआ मान लिया जाता है; किन्तु इनमें सर्व देशीय समझ, सर्व कालीय समझ, हर व्यक्ति का समझ एक ही है, इस जगह में आया नहीं | इसी के लिये विकल्प मानव सम्मुख आया है | विकल्प विधि से ही विकसित चेतना को पहचानना होता है | विकसित चेतना विधि से जीने से ही अनुभव प्रमाण, विचार प्रमाण, कार्य-व्यवहार प्रमाण -तीनों प्रमाण होता है | यह अविभाज्य हैं | जब कभी भी विकसित चेतना होगी, तीनों प्रकार से प्रमाण होना स्वाभाविक है |

अनुभव विधि से जो प्रमाण होता है वह समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में होता है | समाधान, समृद्धि हर परिवार में; अभय, सह-अस्तित्व सर्वमानव के साथ है | मानव ही व्यवस्था का प्रेरक, धारक-वाहक होना देखा गया | हर परिवार में समाधान, समृद्धि प्रमाणित होता है | समझदारी से समाधान, श्रम से समृद्धि हर परिवार में होना ही परिवार का वैभव है | राज्य का मतलब वैभव से है | परिवारमूलक स्वराज्य का मतलब हर परिवार वैभव का अपेक्षा तो रखता ही है | प्रमाण हो जाता है विकसित चेतना विधि से | विकसित चेतना का पहचान होना अध्ययन विधि से होता है | अध्ययन और पठन में अंतर देखा गया है | पठन अक्षरों का होता है, शब्दों का होता है, इसका गम्य स्थली स्मरण ही है | हर समुदाय किसी भाषा के साथ ही है | हर भाषा में विकल्प को प्रस्तुत किया जा सकता है | इन प्रयासों में में कुछ प्रान्त इस बात को तैयार कर रहे हैं, स्थानीय भाषा के अनुसार विकल्प को प्रस्तुत कर रहे हैं |

एक ऐसा देश है,जहाँ बहुत प्रकार का भाषा के साथ मानव जीता है | बहुत प्रकार के भाषा में जीता हुआ अध्यात्म को लेकर चला | के सभी भाषा में अध्यात्म का स्वीकृति है ही | इसी आधार पर में ही कई प्रान्तों में अपने-अपने भाषा में विकल्प को प्रस्तुत करने का प्रयत्न चल रहा है | इसको देख सकते हैं | इसमें भागीदारी कर सकते हैं | प्रयोजन को स्थापित कर सकते हैं | प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं | विकल्प सर्वशुभ के अर्थ में है | सर्वमानव चेतना विधि से ही जीता है | अभी तक मानव जीवों से अच्छा जीने की चेतना प्राप्त किया है | अब विकसित चेतना विधि से जीना शेष है | विकसित चेतना को सर्वदेशीय, सर्वकालीय विधि से अभ्यास करने की आवश्यकता है | यह शिक्षा विधि से हो सकता है | शिक्षित व्यक्ति ही अभ्यास करने पर विकल्प को साकार कर सकता है | विकसित चेतना का धारक, वाहक केवल मानव ही है | फलस्वरूप विकसित

चेतना विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित होता है; जिसको अनुभवमूलक माना जाता है विकल्प विधि में | विकल्प विधि से ही वैचारिक प्रमाण प्रस्तुत होता है; जो नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य के रूप में होता है | इसको विकल्प में स्पष्ट किया है | तीसरा प्रमाण कार्य-व्यवहार के रूप में प्रस्तुत होता है | दूसरा भाषा में प्रस्तुत किया गया है, जिसका अध्ययन हो सकता है | इस क्रम में तीसरा प्रमाण का स्वरुप स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में होता है | यह लिखित रूप में लिख कर के दे दिया है | मानव अपने स्वत्व में चेतना सम्पन्न होना देखा गया है | चेतना ही ज्ञान है | यद्यपि जीव संसार भी सम्पन्न है | जीव चेतना में जीने की आशा ही अंतिम बात है |

दूसरा भाषा से जीने का आशा ही जीवों का धर्म है | धर्म ही आचरण के रूप में प्रस्तुत है | सभी जीव जीने की आशा से ही जीते हैं | इसे भले प्रकार से अध्ययन किया है | जीवों में ही मांसाहारी, शाकाहारी दोनों होते हैं | दोनों जीने के अर्थ में ही जी रहे हैं | इसका मर्यादा को नियंत्रित कर रखना मानवीयतापूर्ण मानव का अधिकार है | मानवीयतापूर्ण मानव का अधिकार विकसित चेतना विधि से ही सम्पन्न होता है | इसे भले प्रकार से देखा गया है, समझा गया है, विकल्प रूप में प्रस्तुत किया गया है | इस प्रकार विकसित चेतना विधि से ही मानवत्व का स्वरूप स्पष्ट होता है | इसको ऐसा कहा जा सकता है कि विकल्प विधि से जीने के लिये रास्ता, विधि, विधान, आवश्यकता के रूप में प्रस्तुत हो गया है | यह सर्वदेश कालीय मानव में स्वीकार होता है | भागीदारी के बारे में सोचने पर पता चला, वृद्धावस्था में पहुँचा हुआ जनमानस इसको प्रमाणित करने में अधिक असमर्थ है | यही प्रौढ़ लोगों के साथ देखने पर पता चलता है, वृद्ध लोगों से कम लोग इसका असमर्थता को स्वीकारते हैं | इसको प्रमाणित करने में समर्थता को सर्वाधिक लोग स्वीकारते हैं |

इस आधार पर इस विकल्प को प्रस्तुत किया है | सर्वदेश कालीय मानवों में यह स्वीकार हो जाय, सर्वाधिक लोग समझदार हो जाय, सह-अस्तित्व में जीने का अधिकार हो जाय; इसीआशय से विकल्प को प्रस्तुत किया है | क्रमागत विधि से इसका स्वीकारोक्ति देखने को मिलता है | सर्वाधिक लोग स्वीकारते हैं, कम लोग नहीं स्वीकारते हैं | युवा लोगों में ९०% से अधिक स्वीकार्य है | प्रौढ़ लोगों में ७०%-८०% माना जा सकता है | इस ढंग से यह दोनों मिलकर बहुमत में आना स्वाभाविक है | इसी आधार पर परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था के बारे में बात किया है | विकल्प विधि से ही मानव समझदार होना पाया गया है | सर्वप्रथम मैं स्वयं जी कर देखा, जिसमें उन्माद और अपराध दोनों समाप्त हो गया | यद्यपि हमारा आयु भी उसके अनुकूल हो गया | अभी मैं ९३ वर्ष पूरा कर चूका हूँ, आगे ९४ वर्ष में चल रहा हूँ | आगे जनवरी १४ तारीख सायं काल ७ बजे तक ९४ वर्ष पूरा हो जायेगा | इसको अच्छी तरह से हम परिशीलन किया हूँ |

सर्वदेशकाल में मानव ही सर्वशुभ चाहता है | शुभ के अर्थ में हर मानव जीना चाहता है, प्रमाणित करना चाहता है अथवा जैसा जीता है उसी को शुभ मानता है | दो में से एक स्थिति में हर मानव को देखा जा सकता है | विकल्प विधि से साम्य रूप में हो जाता है विकसित चेतना के रूप में | विकसित चेतना ही तीनों प्रमाण का आधार है | इन तीनों प्रमाण में, से कम से कम एक प्रमाण से भी जीता है, सार्वभौमता, अखण्डता इन दोनों का प्रमाण हो जाता है | इस क्रम में मानव-मानव के साथ विश्वास करना स्वाभाविक है | अभी तक मानव-मानव के साथ विरोध से बहिर्मुख होना सीखा है, जीवों के साथ जीना सीखा है | जीवों के साथ जीने के लिये जीव चेतना ही होगा |

जीव चेतना के स्वरूप में जीकर जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया है | इसमें सफल होने के कारण आगे की सोच स्वाभाविक है | आगे की सोच में यही आता है- सार्वभौमता, अखण्डता | इस विधि से हम अच्छी ढंग से धरती पर जी सकते हैं

| धरती अपने में संतुलित हो सकता है, धरती पर मानव संतुलित हो सकता है | इन दोनों उपलब्धि के साथ ही मनुष्येतर प्रकृति नियमित विधि से संतुलित होना पाया जाता है अथवा सम्भव है | इस क्रम में मानव, मानवत्व के साथ अपना वैभव को परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था के रूप में प्रमाणित करना सहज है | मानव ही नियम, नियंत्रण, संतुलनपूर्वक मनुष्येतर प्रकृति के साथ जी पाएगा | अभी की स्थिति में जीवों के साथ जीना चाहता है | कुत्ता अथवा बाघ प्रधान है जीने के लिये | बाघ को बचाने के लिये प्रशासनिक विधि से प्रयत्न चल रहा है | इस प्रयत्न में बाघ को बचाना प्रधान कार्य माना है | इतिहास के अनुसार बाघ से भयभीत होकर बंदूक का अनुसंधान हुआ |

वही बंदूक अभी मानव के साथ प्रयोग हो रहा है | बंदूक के बलबूते पर बाघ का भय कम हो गया है | अभी बाघ को बचाने के लिये हर देश में अथवा अधिकाँश देश में प्रयत्न चल रहा है | उसमें भी एक है | भी बाघ सुरक्षित करने के लिये बहुत सारा जंगल को उपयोग करना चाहता है | बाघ के सुरक्षा के क्रम में बहुत सारे लोगों का आजीविका चल रहा है | मनुष्य अपने आजीविका के लिये सफल कर्म करना सीख रहा है | इस विधि से हम कहीं पहुंचेगें नहीं | पहुंचने के लिये एकमात्र विधि है विकल्प | विकल्प विधि से सदा-सदा सुखी होने का रास्ता साफ दिखता है | इसको हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है, समझ सकता है, प्रमाणित कर सकता है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)